

## दिव्याशीष

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. \* प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय तीर्थेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. \* प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय लब्धिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

## जीवन यात्रा

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय  
लब्धिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

श्रीमती केसरबाई तथा श्रीयुत मोहनलालजी मुंदियाड़ा के प्रतिभावान् सुपुत्र. खरसोदकला के अद्वितीय रत्न, परमपूज्य आचार्य तीर्थेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के आशाकारी शिष्य श्रद्धेय प.पू. आचार्य लब्धिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. का जन्म विक्रम संवत् १९७७ में हुआ था, मुनि दीक्षा विक्रम संवत् १९९२ में तथा उन्हें आचार्य पदवी विक्रम संवत् २०२४ में प्रदान की गयी। विक्रम संवत् २०५१, पोष सुदि सप्तमी, दि.०८ जनवरी १९९५ को बाकरा रोड, राजस्थान में उनका देवलोकगमन हुआ।

शान्त स्वभावी, सरल परिणामी, हित-मित-प्रिय वाणी से विभूषित आचार्य लब्धिचंद्रसूरी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को देख-पढ़कर कोई भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। उनका गरिमायु व्यक्तित्व तथा ओजस्वी वक्तृत्व सहज ही आकर्षित कर लेते थे। वे संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, उर्दू एवं गुजराती के ज्ञाता थे। यद्यपि उनका विहारक्षेत्र राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं गुजरात राज्यों तक सीमित था तथापि अपने उदारमना व्यक्तित्व से उन्होंने भारतभर के श्रावकों का दिल जीत लिया था। वे युगप्रधान आचार्य राजेन्द्रसूरी की दैदीप्यमान परम्परा के उज्ज्वल सूर्य थे।

उनके गुरु आचार्य तीर्थेन्द्रसूरी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं सामुद्रिकशास्त्र में निष्णात थे। अपने खरसोदकला प्रवास के दौरान उन्होंने बालक माणकलाल को देखकर जिनशासन की सेवा में उसका उज्ज्वल भविष्य भाँप लिया एवं उसे अपनी सेवा में ले लिया। तदनन्तर उसे योग्य जानकर उसे मुनि दीक्षा प्रदान की। बालक माणकलाल जिनप्रव्रज्या ब्रह्मण कर अब मुनि

लब्धिविजय बन चुके थे। गुरुवर आचार्य तीर्थेन्द्रसूरी के कालधर्म होने पर मुनि लब्धिविजय को आचार्य पद से अलंकृत किया गया। वे अब आचार्य श्रीमद्विजय लब्धिचंद्रसूरी इस नाम से जाने जाते थे।

आचार्यश्री लब्धिचंद्रसूरी ने अपने जीवनकाल में अनेक स्थानों पर प्रतिष्ठाएँ करवायीं, दीक्षाएँ प्रदान की, उपधान तप करवाये, संघयात्राएँ निकलवायीं तथा उजमणा किये।

बाकरा रोड में एक नवनिर्मित जिनालय को निरखकर आचार्यश्री ने कहा कि “मेरा अन्तिम संस्कार इसी स्थल पर करना।” उसी स्थल पर उन्होंने अपने दण्ड से चिह्न बनाया और अपना पूर्वोक्त कथन दोहराया। तत्पश्चात् गुरु सप्तमी के कार्यक्रम में आगन्तुक अतिथियों का योग्य सेवा-सत्कार हो, कार्यक्रम सुचारु रूप से चले, इन बातों के प्रति आश्चर्य होकर आचार्यश्री अपने कमरे में चले गये। कार्यक्रम पूर्णतः समाप्त होने के बाद आचार्यश्री का निजी सेवक चिह्ना पड़ा। उसकी आवाज सुनकर सभी गुरु के कक्ष की ओर दौड़ पड़े। वहाँ पहुँचे तो देखा कि आचार्यश्री अनन्त की ओर महाप्रयाण कर चुके थे। आचार्यश्री को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। इस संबंध में उनके द्वारा कही गयी सभी बातें सत्य प्रमाणित हुईं। उन्होंने अपनी मृत्यु का भी दिन क्या चुना पोष सुदी ७, गुरु सप्तमी। जो पर्व सारे देश में धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जाता है। आचार्यश्री ने अपने आप को उपकारी दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि के साथ जोड़कर, स्वयं को हमेशा के लिए अमर कर दिया।

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न, प्रज्ञा पुरुष परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय लब्धिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. भी एक ऐसे ही विरले संत थे, जो सहस्रों भक्तों की आस्था के केन्द्र होने पर भी अहम् और अभिमान से कोसों दूर रहे। वे जीवन पर्यन्त चेहरे पर स्मित मुस्कान बिखेरते हुए जन-जन में भगवान महावीर के उपदेशों का प्रचार-प्रसार करने को रत रहे। आचार्यश्री इस दुनिया में नहीं हैं, फिर भी उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की खुशबू आज भी भक्तों में दिखलाई देती है।



SCAN QR CODE